शिव गरिमा

काशी शिवपुरी आश्रम की मासिक ई-पत्रिका

वर्ष–2, अंक–6, माह–जून 2024

आशीर्वाद : प.पू. परमहंस स्वामी सुगंधेश्वरानंद, राजयोगी प्रभु बा

प्रकाशक : एकता ध्यान योग एवं सेवा ट्रस्ट, ईंटालीखेड़ा

साधन में सेवा का योगदान

वासुदेव कुटुंब के मेरे प्रिय साधकों, जय श्री कृष्ण। सद्गुरु परंपरा की कृपा से आपका साधन नियमित होगा। हमारे मार्ग में साधन के लिए मन की निर्मलता का महत्व बताया गया है। संतों व भक्तों ने भी अपने अनुभव से कहा है कि- "निर्मल मन जन सो मोहि पावा।" इस निर्मलता के लिए यों तो अनेक उपाय हैं पर उनमें से एक है जीव सेवा। जीव सेवा यानी मानव सेवा व अन्य जीवों की सेवा। अभी-अभी गए संकल्प दिवस पर अनेक केंद्रों, आश्रमों व साधक समूहों द्वारा सेवा के अनेक समाचार पाकर खुशी हुई।मेरा मानना है कि प्रत्येक केंद्र, आश्रम आदि को वर्ष में एक बार तो किसी भी अवसर पर सेवा का कोई न कोई कार्य करना ही चाहिए। इसमें यह बात महत्वपूर्ण नहीं है की सेवा कार्य बड़ा है या छोटा, खर्चीला है या बिना खर्च का, महत्व इस बात का है कि हम शुद्ध भाव से इसे

करें। इस संबंध में ध्यान रखने योग्य कुछ बातें मैं बताती हूं -

1. सेवा कार्य में सभी स्थानीय साधकों को जोड़ें।

2. अपने क्षेत्र में जहां जिस प्रकार की सेवा की आवश्यकता हो उसका पहले पता लगाएं।

3. निर्धारित दिन से कुछ दिन पहले ही सेवा होने वाले क्षेत्र में अच्छे से जानकारी दें।

4. जितने भी समय का कार्यक्रम हो उसकी रूपरेखा पहले से बना लें।

5. यह ध्यान रहे कि हम सहयोग कर रहे हैं यह भावना ना आने पाए ।बल्कि विचार यह रहना चाहिए कि जो लाभान्वित हैं उन्होंने हमें सेवा का मौका दिया है यह उनकी कृपा है।

6. सेवा प्रचार के लिए नहीं है किंतु स्थानीय प्रभावशाली लोगों को इस अवसर पर अवश्य जोड़े।

7. केवल कुछ भी बांट देना हमारा उद्देश्य ना हो बल्कि उनकी क्या और कितनी आवश्यकता है पहले से पता कर लें।

8. वस्तुएं देना ठीक है किंतु जहां पर भी जाएं वहां पर लोगों को एकत्र कर कुछ देर भजन, धुन आदि भी हों।

9. जैसे कार्य से पहले योजना बनाना जरूरी है वैसे ही उसके बाद उसकी समीक्षा भी कर सकें तो आगे के लिए अच्छा रहता है।

यह बातें हालांकि बहुत छोटी हैं किंतु एक सेवाभावी साधक के लिए बहुत उपयोगी हो सकती हैं। साधन का एक प्रकार सेवा भी है। सेवा को भी साधन की भांति मनोयोग से करने पर आत्मिक प्रसन्नता व भावों की शुद्धि होती है। इसलिए ऐसे कार्य जारी रखें। फिर भी अंत में यही कहना है कि सेवा के साथ-साथ साधन भी पूर्ण रूप से करना है। ॥卐॥

आपकी अपनी प्रभु बा

सहज अभिव्यक्ति

संपादकीय

सांसारिक दायित्व व व्यवहारों के कारण किसी भी व्यक्ति का यह भाव क्षीण होना स्वाभाविक है कि मुझे मानव देह मिलने के पीछे कोई विराट उद्देश्य है। वातावरणीय सोच के कारण वह संबंधों के निर्वहन और दुनियादारी में उलझता चला जाता है तथा उसे लगने लगता है कि यही तो जीवन है। जबकि यह तो जीवन का एक छोटा सा अंशमात्र है।वास्तव में तो हमें मानव जीवन मिला ही इसलिए है कि हम स्वयं में स्थित उस तत्व को खोज लें जो हमारा निजी रूप है। उसे खोज कर अपने आनंद को प्राप्त कर लें और मुक्ति पथ पर चल पड़ें। पर यह उदात्त भावना न जाने कब विस्मृति हो जाती है? ऐसे समय में किसी के भी जीवन में सद्गुरु का आना एक चमत्कारी घटना होती है।सद्गुरु यानी वह महान हस्ती जो अब एक तत्व में रूपांतरित हो चुका है। वह अपने संपर्कित हर व्यक्ति को उस प्रकाश से आलोकित करने को तत्पर है जो उसने पाया है। वह अपने अनुभवों को बता कर हर इच्छुक व्यक्ति को उस पार की यात्रा के गुर सिखाने के लिए सन्नद्ध है। उसके लिए अपना-पराया कोई नहीं रहा है। उसके स्वरूप का इतना विस्तार हो चुका है कि उसे असीम ही कहा जा सकता है। हर एक शिष्य की क्षमता अनुसार वह उसमें भीतरी रसायनों का, मानसिक विचारों का परिवर्तन करता है। उस शिष्य की शक्ति का जागरण कर उसे चैतन्य बनाता है। उसे

चेतनता के द्वारा गतिमान करता है और जब तक वह मंजिल तक न पहुंच जाए तब तक सदगुरु संबल देता रहता है। यह शिवत्व का भाव ही सद्गुरु को कल्याणकारी तत्व के रूप में निरूपित करता है।एक बात और भी है कि जिस भी व्यक्ति में अपने जीवन के परम उद्देश्य प्राप्ति की भावना व सुषुप्ति को त्यागने के लिए संकल्पना तत्पर होती है। तो उसे सद्गुरु को ढूंढना नहीं पड़ता, सद्गुरु स्वयं उसे खोज लेता है। जाने अनजाने सद्गुरु अपनी सन्निधि से उसे रूपांतरित करने लगता है।वासुदेव कुटुंब में यह महद् कार्य हम सभी साधकों के साथ परमपूज्य परमहंस राजयोगी प्रभु बा कर रहे हैं। हमारी पात्रता पर ध्यान न देकर वे हमें अपनी पसंद बना चुके हैं। ऐसी स्थिति परम सौभाग्यशालियों को ही प्राप्त होती है।सद्गुरु का प्रेम अपने स्तर पर है। पर हमारा भी कर्तव्य इतना तो बनता ही है कि हम सद्गुरु को वह हमें जैसा गढ़ना चाहे वैसा गढ़ने दें। अपनी व्यर्थ की होशियारी व चतुराई छोड़कर स्वयं को उन्हें समर्पित कर दें। तभी हमारा शिष्यत्व साधकत्व में और साधकत्व सिद्धत्व में बदलने की संभावनाएं बनेंगी। ॥卐॥

– स्वामी गुरुराज

पाथेय-प्रसाद

प्रभु बा का अनुभव

ठाणे में दत्तदर्शन

जहां तक मेरी स्मृति है यह बात शायद 22 दिसंबर 1991 की है। तब हम 'जीवन प्रेम' में रहते थे। परिवारजन भी साथ ही थे। सद्गुरु कृपा से साधन और सत्संग उत्तम चल रहा था। उस समय गुरुवाणी होती थी। गुरुदेव ध्यान में संकेत देते थे। मार्गदर्शन करते थे। एक विशेष अवस्था में मैं बोलती थी और पास के साधक उसे लिख लिया करते थे। उस उपदेश, संदेश को गुरुवाणी मानकर उसका अनुसरण करते थे। ऐसा कई बार हुआ है और हर बार वह वाणी पूरी तरह से सत्य साबित हुई है। उस दिन मुझे ध्यान में दत्त गुरु के दर्शन के पूर्व संकेत मिले। उस दिन गुरु वाणी हुई कि आज ध्यान में रात को 12:00 बजे सुगंधा को दत्त गुरु के दर्शन होंगे। उन्हें ठीक समय पर ध्यान में बिठा देना। यह बात रात के 11:30 बजे के आसपास की थी। समय बहुत कम था अतः सभी साधकों ने तुरंत कक्ष को साफ किया। एक साधक बाजार में जाकर हार, मिष्टान्न आदि लेने चला गया। उस समय ठाणे के बाजार इतनी देर तक खुला नहीं रहते थे। किंतु संयोग ऐसा हुआ कि सूखे मेवे, फल, फूल और मिठाई की एक-एक दुकान खुली मिल गई तो वह साधक काजू कतली, काजू, संतरे और हार लेकर के आ गया। ठीक 5 मिनट पहले मेरा आसन लगा दिया गया। सामने गुरुदेव का फोटो रख दिया गया और सब सामग्री मेरे पास रख दी । सभी साधक

दरवाजा बंद करके बाहर प्रतीक्षा में बैठ गये ।आधे घंटे बाद मैंने उन्हें आवाज दी तो वे अंदर आए और जिज्ञासा प्रकट की। मैंने बताया - ठीक 12:00 बजे मुझे ध्यान लगा और ऐसा अनुभव हुआ कि कमरे में हजारों भारी लैंपों का प्रकाश फैल रहा है। एक अद्भुत उजाला चारों तरफ व्याप्त गया। तभी दत्त गुरु की स्वर्णमयी प्रतिमा प्रकट हुई और वह प्रतिमा चार कदम चलकर आगे आई। अभी भी वह प्रतिमा जहां में बैठी थी वहां से करीब 8-10 फीट दूर थी। दत्त गुरु की प्रतिमा ने खड़े होकर वहीं से हाथ लंबे करके हार उठाया और मुझे थमा दिया।

फिर स्वयं अपने हाथ से एक काजू उठाकर प्रसाद लिया। काजू कतली का एक टुकड़ा तोड़कर ग्रहण किया और पूरे संतरे में से एक फांक निकाल कर उसका भी भोग प्रसाद स्वीकार किया। ताज्जुब की बात तो यह थी कि एक फांक निकलने के लिए उन्हें संतरे को छीलने की आवश्यकता नहीं पड़ी। संतरे की फांक निकालने के बाद भी संतरे की बाहरी परत पूरी तरह महफूज थी। कुछ उपदेश दिया। और फिर बोले कि अब घर में नहीं बैठना है। गली-गली जाकर सत्संग करो। उस समय मेरे शरीर की स्थिति ऐसी हो गई थी कि जैसे एक दिव्य प्रकाश और भव्य दर्शन के बाद भाव दशा होती है। मुझे थकान तो नहीं थी लेकिन एक खुमारी सी अनुभव हो रही थी। उसके बाद गुरु वाणी का क्रम बंद ही हो गया।इस अनुभव के दूसरे दिन की ही बात है कि मलाड़ से एक साधक के घर पर जाकर सत्संग करने का निमंत्रण मिला। तीसरे दिन ठाणे में ही सांई मंदिर के समीप सत्संग हुआ। इस तरह दत्त दर्शन के साथ ही घर से बाहर सत्संग का क्रम आरंभ हो गया।

॥卐॥

गौरवशाली पल

(महायोग भूषण पुरस्कार:2024)

शक्तिपात परंपरा में सदा स्मरणीय परमपूज्य श्री नारायण काका ढेकणे महाराज की प्रेरणा व आशीर्वाद से स्थापित 'परमपूज्य परमहंस श्री लोकनाथ तीर्थ स्वामी महाराज महायोग ट्रस्ट' के पुणे जिला केंद्र की रजत जयंती पर आयोजित महोत्सव 'महायोग चैतन्य मेलावा' के अवसर पर 30 अप्रैल व 1 मई 2024 को परमपूज्य परमहंस स्वामी श्री सुगंधेश्वरानंद राजयोगी प्रभु बा को "महायोग भूषण पुरस्कार" प्रदान किया जाना था। स्वयं प्रभु बा स्वास्थ्य कारणों से इसमें उपस्थित नहीं हो पा रहे थे। गुरु पुत्र श्री दत्तप्रसाद जी व स्वामी शिवानंद जी पुणे के साधकों के साथ इस पर्व में उपस्थित रहे। इस विशिष्ट कार्यक्रम में सम्मानित उपस्थिति के रूप में परमपूज्य श्री निजानंद तीर्थ स्वामी महाराज-हरियाणा, वेदमूर्ति परमपूज्य श्री सूर्यकांत राखे महाराज-नाशिक, परमपूज्य श्री सुरेशानंद तीर्थ महाराज-देवास, परमपूज्य श्री मोरेश्वर जोशी महाराज-पुणे, परमपूज्य श्री चेतन विलास तीर्थ महाराज-नवाली, परमपूज्य श्री गोपाल कृष्ण तीर्थ स्वामी महाराज-पुणे, माननीय श्री प्रकाश जी पाठक-धुलै को आमंत्रित किया गया। समारोह की अध्यक्षता के लिए परमपूज्य श्री प्रकाश प्रभुणे महाराज, प्रधान विश्वस्त जागतिक महायोग केंद्र नाशिक को निमंत्रण दिया गया।

इससे पूर्व उक्त पुरस्कार परमपूज्य गोविंद देव गिरि महाराज-पुणे, परमपूज्य वेदमूर्ति गणेश कृष्ण जी कोथवलेकर गुरुजी- पुणे, परमपूज्य बालाजी तांबे-पुणे, परमपूज्य गणेश्वर शास्त्री जी द्रविड़-पुणे, परमपूज्य मोरेश्वर जोशी महाराज-पुणे, परमपूज्य श्री सुरेशानंद तीर्थ स्वामी महाराज-देवास एवं परमपूज्य श्री माधव तीर्थ स्वामी महाराज-पुणे को प्रदान किया गया है।

यह पूर्व में ही सूचित कर दिया गया था कि उक्त कार्यक्रम में राजयोगी प्रभु बा प्रत्यक्ष उपस्थिति न हो सकेंगे। तो आयोजक परिवार ने एक अद्भुत निर्णय लिया व समारोह से पूर्व 12 अप्रैल 2024 को आदरणीय मुकुंद वासुदेव ठकार जी के साथ पुणे जिला केंद्र के साधकों का प्रतिनिधिमंडल काशी शिवपुरी आश्रम आया। यहां प्रभु बा को यह पुरस्कार समर्पित किया गया। इस अवसर पर परमपूज्य श्री ठकार काका के उद्बोधन को 'साधन संपदा' में यथारूप दिया गया है। ॥卐॥

सौजन्य -स्वामी श्री शिवानन्द

साधन-संपदा

उद्‌बोधन - परमपूज्य श्री ठकार काका

(आदरणीय श्री ठकार काका 'परमपूज्य परमहंस श्री लोकनाथ तीर्थ स्वामी महाराज महायोग ट्रस्ट, पूना के अध्यक्ष हैं। आप शक्तिपात दीक्षा देने के अधिकारी हैं। आरंभिक वंदना के बाद आपने मराठी भाषा में अपनी बात कही जिसका हिंदी रूपांतर स्वामी श्री हृदयानंद जी ने किया है)

इस प्रकार की जो भगवान शिव से प्रस्फुटित महान गुरु परंपरा है उस गुरु परंपरा के सभी सद्गुरुओं के चरणों में मेरा साष्टांग नमस्कार है। मेरा मानना है कि प्रत्यक्ष भगवती कुंडलिनी माता राजयोगी प्रभु बा के स्वरूप में इस धरती पर प्रकट हुई है, इनके चरणों में मेरा नमस्कार है।

मेरे सामने जो आप सभी साधकजन बैठे हैं वो प्रत्यक्ष राजयोगी प्रभु बा का ही रूप हैं ऐसा समझकर मैं आप सभी को भी प्रणाम करता हूं। मैं आपको बताना चाहता हूं कि परमपूज्य

राजाधिराज योगिराज श्री गुलवणीजी महाराज यह मेरे मंत्र गुरु हैं और परमपूज्य योग तपस्वी श्री नारायण काका ढेकने महाराज यह मेरे वेद गुरु हैं ऐसे इन दोनों महान गुरुओं से मुझे साधन का कृपाप्रसाद प्राप्त हुआ है तो मैं यह कहना चाहता था कि कई वर्षों से मेरी व्यक्तिगत रूप से शिवपुरी आश्रम आने की प्रबल इच्छा रही है यहां आकर प्रभु बा के दर्शन करने का मन में कई बार ख्याल आया है।

प्रभु बा जब भी प्रवास पर पूना शहर आते थे तो हम दूर से ही उनका दर्शन प्राप्त करते थे लेकिन मन में कहीं ऐसा लगता था कि दौड़कर प्रभु बा के पास जाएं, उनके चरणों पर अपना शीष झुकाएं और उनसे यही प्रार्थना करें कि ऐसी ही कृपादृष्टि हम सभी पर वह हमेशा बनाए रखें। तो आज के अवसर पर मैं आप सभी को यही बताना चाहता हूं कि हमें यह जो साधन मार्ग मिला है यह भगवती कुंडलिनी की जागरण से प्राप्त है। इस मार्ग में हम सभी को नियमित रूप से और समर्पित भाव से ध्यान साधना करना अति आवश्यक है। यहां पर समर्पण भाव का अत्यधिक महत्व है।

अब देखो हम सभी प्रभु बा को नमस्कार करते हैं, उनके चरणों में झुकते हैं। प्रभ बा नामक देह को हम नमस्कार करते हैं लेकिन एक बात मैं आपसे पूछता हूं क्या कभी हमने और आपने प्रभु बा के अंतर्मन में झांकने की कोशिश की है, अगर झांकोंगे तो पाओगे कि हर जगह शिव तत्व समाया हुआ है। उनके रोम-रोम में शिव तत्व समाया है। मैंने यहां आकर के देखा तो हर जगह हर कोने

में शिव और शिवलिंग की प्रतिष्ठापना की हुई है। अनेक महापुरुषों ने उन्हें अनेक उपमा दी है। महालक्ष्मी की भी उपमा दी है, भगवती की भी उपमा दी है लेकिन अगर मुझे पूछो तो मेरे मन में प्रभु बा जगन्माता है और इस जगन्माता से हम यही प्रार्थना करते हैं कि हम सब बालकों पर वे निरंतर कृपा करते रहें।

आज हम यहां काशी शिवपुरी आश्रम आये हैं उसके पीछे का कारण यह है कि हमारे पूना जिला केंद्र का यह रजत महोत्सव वर्ष है और हम सब अपनी तरफ से राजयोगी प्रभु बा को सम्मानित करना चाहते हैं। सच पूछो तो हमारी इच्छा थी कि 30 अप्रेल और 1 मई को यह जो पूना शहर में कार्यक्रम समारोह आयोजित होने जा रहा है कि प्रभु बा वहाँ पधारें । हम सभी दौड़े-दौड़े उनके पास जाएं और उनके चरणों में अपना माथा रखकर उनका वंदन करें, उनको नमस्कार करें। वहाँ के सभी साधक भी उनके दर्शन लाभ लें किन्तु प्रभु बा के स्वास्थ्य के वजह से यह संभव नहीं हो पा रहा है। इसलिए मैं और इस केंद्र के कुछ वरिष्ठ साधक यहां काशी शिवपुरी आश्रम आये हैं ताकि हम प्रत्यक्ष रूप से राजयोगी प्रभु बा को सम्मानित कर सकें,

और यहां आकर इस आश्रम में और इस आश्रम का वातावरण देख करके हम सभी मंत्रमुग्ध हो गए हैं , निःशब्द हो गए हैं। क्या कहें कुछ सूझ नहीं रहा है।

हम सभी को यह बात हमेशा ध्यान में रखने चाहिए कि गुरु कोई एक व्यक्ति नहीं होकर यह तो तत्व है। आज यहाँ पर सभागार में बैठकर जहां तक मेरी नजर जा रही है वहाँ तक मुझे आप सभी के अंदर एक आनंद, उत्साह और चैतन्यता दिखाई दे रही है। जहां देखो वहाँ पर केवल आनंद और प्रेम ही नजर आ रहा है और यहां मंच पर जो सद्गुरु स्थान पर आसीन हैं उन सद्गुरु प्रभु बा को बस निहारते जाए और यह दर्शन जो है हमें हमेशा प्राप्त होते रहे यही मन में कामना है।

प्रभु बा का स्वरूप कितना अद्भुत है। बाहर से देखने में वे बड़े ही सरल और सहज दिखते हैं, साधारण दिखते हैं लेकिन आपके भीतर में सूर्य का तेज, प्रकाश और चंद्र की शीतलता है। गुरु शब्द का अर्थ तो आप सभी जानते होंगे गुरु शब्द का अर्थ है जो अंधकार से प्रकाश की ओर ले जाता है। तो जहाँ पर प्रकाश है वहाँ पर अंधकार रह सकता है क्या, जहाँ पर ज्ञान है वहाँ पर अज्ञान रह सकता है क्या, आपके भीतर धधकता तेज है, प्रकाश है। देने के लिए कई उपमाएं दे सकते हैं लेकिन फिर से एक बार प्रश्न यही उठता है कि क्या हमने अपने सद्गुरु के भीतर झांकने की कभी कोशिश की है क्या। पुनः एक बार कहूं कि जहां प्रकाश है वहां अंधेरा रह सकता है क्या। जहां पर प्रखर तेज है वहां पर कुछ अमंगल रह

सकता है क्या, और जहां पर ज्ञान है आत्मज्ञान है वहां पर अज्ञान रह सकता है क्या। और यही सारे तत्व प्रभु बा के रोम रोम में स्थापित हैं। हम प्रभु बा की आकृति से, इस देह से प्रेम करते हैं लेकिन व्यक्तिगत रूप से मुझे ऐसा लगता है कि हमें इससे कहीं और आगे चलना है एक व्यक्ति के रूप में सद्गुरु से अवश्य प्रेम करें लेकिन गुरु तत्व को भी स्पर्श करना जरूरी है। उसे समझना जरूरी है, गुरु तत्व अत्यंत महान है। यह चराचर सृष्टि में व्याप्त है वह चैतन्य स्वरूप में है। हमारे काका महाराज हमें हमेशा कहा करते थे कि सद्गुरु का स्थान जीवन में क्या होना चाहिए, हम जैसे साधारण जीव यह समझते हैं कि सद्गुरु को दिल में, हृदय में स्थापित करना चाहिए। लेकिन उनका कहना था कि सद्गुरु का स्थान इससे कहीं ऊंचा है। सहस्रार जो है उससे भी कहीं ऊँचे एक स्थान पर सद्गुरु को स्थापित करना होता है प्रतिष्ठित करना होता है और वहां से, उस ऊँचाई से जब सद्गुरुकृपा का वर्षाव होता है वह हमारे पूरे शरीर को चैतन्यता से भर देता है। ऐसी गुरुकृपा से शरीर का रोम रोम भीग जाए यही हर एक सदशिष्य का लक्ष्य होना चाहिए।

हम जब प्रभु बा के दर्शन करते हैं, उनको नमस्कार करते हैं तो एक आशीर्वाद का हाथ वो हमारे सर पर रखते हैं। हमारी पीठ के उपर घुमाते हैं। यह आशिर्वाद का हाथ क्या है। यह तेज, प्रकाश और आश्वासन का प्रसाद है। हम आज इतने दूर से सफर करके आए तो यहाँ पहुंचने के बाद सभी ने हर प्रकार से आतिथ्य भाव से हमें भावविभोर कर दिया लेकिन हमने बस एक ही बात चाहिए थी कि हमें प्रभु बा के दर्शन हो जाएं।

रामदास स्वामी ने एक श्लोक जो लिखा है उसमें एक पंक्ति है जो मुझे बहुत पसंद है 'मनुनी विवेके आत्मस्वरूपी बसावे' उसका तात्पर्य यह है कि सद्गुरु के केवल देह रुपी दर्शन न करें, केवल उनके चरणों पर माथा न रखें लेकिन उनके आत्मस्वरूप को जानने की कोशिश करें। क्या हम ये कर सकते हैं ? क्या हम में ये एक क्षमता है? जब हम सद्गुरु के चरणों पर माथा रखते हैं तब क्या हमारा ध्यान उन शक्ति किरणों के तरफ जाता है? जो इन चरणों से प्रकट होती हैं, जो उस पादुका से प्रकट होती हैं और जो हमारे लिए अत्यंत कल्याणकारक हैं। मैं यह विषय आत्मीयता से इसलिए कह रहा हूं कि इन सभी अवस्थाओं से मैं गुजर चुका हूँ। यहां मैंने सब अनुभव किया है। कई बार हमारे मन में सद्गुरु के प्रति शंका रहती है कि क्या वाकई में मेरे सद्गुरु प्रभु बा को शिवत्व प्राप्त है? मन में कई शंकाएं रहती हैं। लेकिन जब हम सद्गुरु के चरणों पर नतमस्तक होते हैं तो हमें वो जो उर्जा प्राप्त होती है, उस उर्जा के तरफ हमारा ध्यान जाना चाहिए। उस समय वो जगदंबा हमें पूरे मन से आशीर्वाद देती है और उसी से हमारे जीवन में हमें यश और सफलता मिलती है। हमारे आध्यात्मिक और लौकिक उद्धार का कारण उसी आशीर्वाद में छुपी हुई ऊर्जा है।

हमें एक बात ध्यान में रखनी है कि परमपूज्य प्रभु बा बोलते नहीं हैं। हम जैसे व्यक्ति बोलते हैं लेकिन प्रभु बा का मौन भी स्वयं बोलता है। एक बड़ा ही अद्भुत व्यक्तित्व है। जो कुछ जीवन में करना था, पाना था उन्होंने सब किया है। लेकिन ये सब करते हुए भी और करने के बाद भी वे अपने सद्गुरु से आंतरिक रूप से एक हो चुके हैं। यही एकरूपता हमें अपने साधन जीवन में भी अपनानी है, हासिल करनी है। हम सभी साधारण जीव प्रपंच में अटके हुए हैं, हम प्रपंच करते हैं। हमारे सद्गुरु आदरणीय नारायण काका ढ़ेकणे महाराज ने कहा था कि प्रपंच में, संसार में हमारे पास शिकायतें ही शिकायतें रहती हैं। सद्गुरु के पास जा करके भी हमारी कुरकुर जारी ही रहती है। तो उन्होंने इन सारे प्रश्नों का, शंकाओं का समाधान अपने एक अलग सुझावों से दिया है। उनका कहना है कि प्रपंच को एक साधक ने अपने सद्गुरु द्वारा प्रसाद रूप में दी गई सेवा समझना चाहिए। जब हम यह समझ जाएंगे और इस तरह से अपने संसार के तरफ दृष्टिकोण रखेंगे तो फिर प्रपंच में भी हमें दुःख स्पर्श नहीं करेगा। फिर घर, परिवार, संसार, नौकरी, व्यवहार जो भी लौकिक जगत में हो रहा है वो सब कर्तव्य पूरा करते हुए भी दुख हमें स्पर्श नहीं करेगा। क्यों नहीं करेगा? क्योंकि मैं संपूर्णतः सद्गुरु को समर्पित हो चुका हूं, उनकी शरण में हूं। गुरु महिमा अगाध है। गुरुचरित्र में इसका विस्तार में महिमा का वर्णन किया हुआ है।

परमपूज्य रामदास स्वामी ने नवधा भक्ति के सूत्र दिये हैं। नव अलग-अलग प्रकार की भक्ति बताई है। जिसमें जो अंतिम सीढ़ी है अंतिम जो उन्होंने बताया है नवीं भक्ति वो है आत्मनिवेदन। आत्मनिवेदन का मतलब अंतर्मुख होना। हम सभी बहिर्मुखी हैं बहिर्मुखी से अंतर्मुखी होने की यात्रा करना जरूरी है। अब आप इस बात को इस तरह से समझिए हम दिन भर जो भी काम करते रहते हैं क्या हम रात को निद्रा में जाने से पहले कभी ये सोचते हैं कि आज जो भी दिन भर जो भी मैंने कहा, मैंने सुना, मैंने देखा, मैंने किया उसमें कहीं मुझसे कोई त्रुटि हुई है? क्या कोई गलती हुई है? क्या कोई अपराध हुआ है? और जब हम इन सवालों के जवाब और अपनी गलतियां ढूंढते हैं, समझते और स्वीकारते हैं तो एक अद्भुत घटना घटती है कि हम कौन हैं ? मैं कौन हूं? इस प्रश्न का यहां धीरे-धीरे जवाब मिलते जाता है।

परमपूज्य काका महाराज द्वारा स्थापित पुणे केंद्र की ओर से जब हम प्रचार और प्रसार के लिए जाते हैं तो हम विभिन्न लोगों से मिलते हैं, अलग-अलग बातें होती हैं। अलग-अलग अनुभव होते हैं। ऐसे ही अनुभव राजयोगी प्रभु बा को भी आए हैं। अभी कुछ देर पहले जब हम वार्तालाप कर रहे थे तभी हमें यह जानकारी मिली कि कितने अपमान सहन करके भी विपरीत परिस्थितियों में भी गुरुदेव ने यह अपने आप में एक पूरी सृष्टि रची है। यह कोई साधारण बात है

क्या? गुरु कृपा और सभी साधक भी साथ जुड़ते गए लेकिन फिर भी श्रेय तो इन्हें ही जाता है। इसीलिए हम सभी ने जब हम प्रभु बा के पास आते हैं तो हमें भी उनके अंतर्मन में झांकने की कोशिश करनी चाहिए, तभी जा करके हमारी साधना सही अर्थ में फलीभूत होगी। हमने यहां पर जब सब आकर के अपनी आंखों से देखा और जाना तो हम कह रहे हैं यह उस भगवती की स्तुति है।

यह बात हमेशा ध्यान में रखना व्यक्ति विशेष को यहां पर महत्व नहीं है। भीतर में जो शक्ति प्रवाहित है उसकी आराधना, उसकी साधना हो रही है, उसकी स्तुति हो रही है इसलिए जो सम्मान हुआ वह इसका है। यहाँ पर जो मेरा भी सम्मान किया गया है। यह हमारे इस हृदय का उस हृदय के प्रति जो संवेदना है वे प्रकट हुई है। इसको इसी नजरिये से देखना चाहिए।

कई दिनों से मन में विचार था कि एक बार तो प्रभु बा की शिवपुरी जाकर वहाँ पर सब कुछ देखना है, अनुभव करना है। मेरी प्रकृति ठीक नहीं रहती है इसलिए अब मेरा प्रवास कम हो गया है लेकिन अब की बार मन में दृढ़ निश्चय कर लिया कि इतने प्यार से जब प्रभु बा ने बुलाया है तो जाना ही है। एक तरह से उनका प्रेम ही हमें यहाँ पर खींच कर लाया है। वे ही मुझे खींच कर यहाँ तक लाई है और इसलिए मैं यहाँ आ सका। यह कैसा है जैसे हम किसी मेले में जाते हैं तो हम अपने मां-बाप का मतलब एक तरह से हम अपने गुरु का हाथ पकड़ते हैं। लेकिन जब हम पकड़ते हैं तो वो पकड़ कभी भी ढीली हो सकती छूट सकती है और हम गुम हो सकते हैं लेकिन जब

सद्गुरु हमारा हाथ पकड़ता है तो फिर हम निश्चिंत हो जाते हैं फिर भटकने का डर नहीं रहता है।

आप लोग कितना सुन्दर सद्गुरु का जयघोष करते हैं। आपके यहाँ पे अभी जो श्रीराम नवमी के उपलक्ष्य में श्रीराम की धुन चल रही है वो कितनी मधुर और कितनी सुन्दर है? राम का नाम मंत्र है। अब राम का अर्थ क्या? मारूती स्तोत्र में जो अंतिम पंक्तियां है उसमें जो राम को नमन किया है उनकी स्तुति की है उसका अर्थ यह है कि उन्होंने उस शरीर रूपी अवतार राम का स्तवन ना करके हमारे अंतर आत्मा में जो हमारा अंदर बैठे हुए आत्मा राम है उसका पूजन किया है। उसकी पूजा होनी चाहिए यही बात हमारे साधन मार्ग में भी है।

हमारे काका महाराज व उनके सद्गुरु परमपूज्य लोकनाथ तीर्थ स्वामी महाराज उनसे उनकी इतनी एकरूपता थी जिसका वर्णन नहीं कर सकते। वह कहते थे कि मेरे प्राण मतलब सद्गुरु ही मेरे प्राण हैं। उन्होंने लौकिक जीवन में शिक्षा प्राप्त की, बड़ी डिग्रियां हासिल की, नौकरी भी उन्होंने एक लंबे अर्से तक की लेकिन यह सब करते हुए भी उन्हें जो साधन मिला था उनका लक्ष्य उस साधन

की ओर ही केंद्रित था और उससे वह एक रूप हो चुके थे। यह करना कोई इतनी आसान बात नहीं। हमारे काका महाराज कहते थे कि किसी साधक के लिए जीवन में दो ही चीज महत्वपूर्ण है- एक तो स्वयं की साधना और दूसरा इस साधन मार्ग का प्रचार। अब हम प्रचार करने जाते मतलब क्या करते हैं कुछ नहीं बस लोगों को यही बताना है कि हमारा यह जो ध्यान मार्ग, शक्तिपात साधना मार्ग वह कितना सीधा और सरल है। इसे उपासना कहते हैं। हम उपासना करते हैं मतलब क्या करते हैं? हमें हमारे सद्गुरु से जो अलौकिक शक्ति मिली है उसका संरक्षण करते हैं। बाह्य जगत से बाह्य विचारों से, बाह्य प्रभावों से उसे सुरक्षित रखते हैं यही उपासना है, यही साधना है। अब जैसे श्री राम वह एक-एक मणी जो हम मंत्र की उच्चारण के बाद गुनगुनाते उसके तरफ जाता है फिर कितनी संख्या हुई यह उसके तरफ ध्यान जाता है।

और जब मेरु मणी को स्पर्श करते हैं तब हमारा चित्त जो है वह एक बार के लिए श्री राम की तरफ आकर्षित होता है। मैं यह अपने निजी अनुभव से कह रहा हूं क्योंकि इन सब अवस्थाओं से मैं गुजरा हूं तो कहने का तात्पर्य यह है कि हमें प्रभु बा जैसे सद्गुरु मिले हैं। ये हमारे चित्त में स्थापित हैं । प्रभु बा ये हमारे केवल गुरु नहीं सद्गुरु हैं । सद्गुरु में पहले सत् शब्द आता है सत् ये कालातीत तत्व है और इस तत्व में जो समाया है वो हमारे सद्गुरु है और ऐसे सद्गुरु करोड़ों में एक होते हैं। बड़े दुर्लभ होते हैं। कैसी अलौकिक गुरु परंपरा है हमारी परमपूज्य वासुवदेवानंद टेंबे स्वामी महाराज जैसी

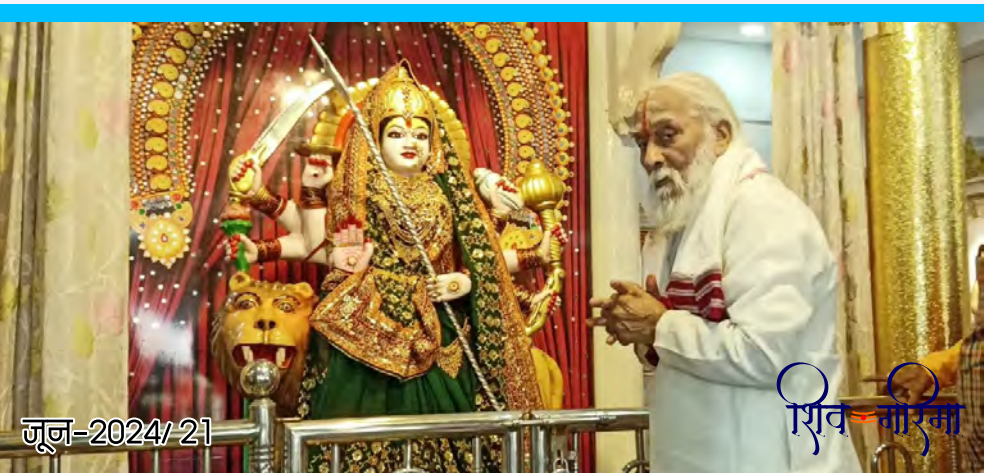

सब अद्भुत विभूतियां इस परंपरा में होके गई हैं और आज के समय में हमारे बीच में ऐसे ही राजयोगी प्रभु बा हैं।

परमपूज्य प्रभु बा की केवल बाहरी लौकिक सत्ता न हो करके वे भीतर से भी परिपूर्ण हैं। इस बात का मुझे बहुत आनंद है। आप साधकों ने भी अपने सद्गुरु की इस अंतरंग परिस्थिति को जानना चाहिए। अक्सर हम साधक यह भूल करते हैं। हम सद्गुरु रूपी देह से प्रेम करते हैं। उसका आदर करते हैं। उस देव के अंदर छुपी अंतरंग चैतन्य शक्ति को कभी जानने की कोशिश करें, वहाँ तक पहुँचने की कोशिश करें, हमें वह कोशिश करनी है।

हमारा ये शक्तिपात साधन मार्ग शरीर से परे और मन से तभी हमें उपर ले जाता है। हमें उसे साधना है। केवल शरीर के ऊपर ध्यान नहीं देना है इसलिए मैं आप सभी से कहता हूँ कि आप सभी बहुत सौभाग्यशाली हैं कि आपको राजयोगी प्रभु बा जैसे सद्गुरु का मार्गदर्शन मिल रहा है। हमारे काका महाराज कहते थे कि जीवन में साधन नियमित रूप से होना चाहिए। एक मंत्र साध लेना चाहिए साधन नहीं तो भोजन नहीं। सर्व समर्पण वृत्ति यह महायोग का एक

मुख्य अंग है। बिना समर्पण के कुछ साध्य नहीं होता है। यह बात हमेशा ध्यान में रखना यही महायोग मार्ग का आत्मा है।

हम जैसे समान्य साधकों को सद्गुरु का मार्गदर्शन निरंतर मिलते रहता है। हाँ, मैं भी एक साधक ही हूँ और एक साधक की तरह ही आप से वार्तालाप कर रहा हूँ। दीक्षा देने का अधिकार मिला है लेकिन माध्यम हूँ। दीक्षा तो काका महाराज मतलब हमारे सद्गुरु ही देते हैं इसलिए मैं आप सभी से आप जैसा ही हो करके बात कर रहा हूँ।

जाते जाते रामदास स्वामी के जो शब्द मुझे याद आते हैं कि 'जिसकी धारणा अपार, वही है मनुष्य रूप में देव का अवतार' और आप सभी के अंदर प्रतिष्ठित ईश्वरीय चेतना को नमस्कार करते हुए मैं अपनी वाणी को यहां विराम देता हूँ। जो कुछ भी मैंने आज यहां पर कहा है वो सब मेरे सद्गुरु माउली के चरणों में अर्पित करता हूँ। मुझे यहां पर आकर बहुत प्रसन्नता हुई प्रभु बा ने हमें यहां पर निमंत्रित किया उसके लिए उनके चरणों में वंदन करते हुए हृदय से आभार व्यक्त करता हूँ। अवधूत चिंतन श्री गुरुदेव दत्त। ॥卐॥

गहरी-डुबकी

सुआरथ के सब मीत रे, पग-पग विपद् बढ़ाय।
पीपा गुरु उपदेश बिनुं, सांच न जान्यौ जाय॥

- संत पीपा दास

भावार्थ : (संत पीपा दास राजस्थान के गढ़ गागरोन के ठाकुर थे। वैराग्य पाकर वे संत हो गए एवं स्वामी रामानंद जी से उनकी दीक्षा हुई। गुरु ग्रंथ साहिब में भी उनके पद संकलित हैं)

संत पीपाजी कहते हैं कि इस संसार में सारे रिश्ते-नाते स्वार्थ पर आधारित हैं। यह संबंध सच्चे व गहरे नहीं हैं। यदि किसी का स्वार्थ प्रभावित हो तो रिश्ते दरकने लगते हैं। संसार में उपयोगितावादी सिद्धांत काम करता है। जिससे लाभ होगा वह प्रिय और जिससे लाभ न हो वह अप्रिय है। ऐसे रिश्ते नाते केवल विपदा ही बढ़ाते हैं। चाहे वह विपदा आर्थिक हो, सामाजिक हो या मानसिक। ऐसा इसलिए है कि जिन रिश्तो को हम निभा रहे हैं वह गहरे अर्थ में तो झूठे हैं वह कालजयी नहीं हैं। पीपाजी की मान्यता है कि सद्गुरु के संपर्क, उनसे प्राप्त मार्ग और उसे मार्ग पर चलने में आने वाली कठिनाइयों का निराकरण, जिन्हें समेकित रूप से उपदेश कहा जा सकता है। इसके बिना सच्चा रिश्ता क्या है वह जाना नहीं जा सकता। सद्गुरु का रिश्ता और सद्गुरु जिससे जोड़ता है वह रिश्ता ही सत्य ह क्योंकि झूठा रिश्ता उलझाता है और सच्चा रिश्ता मंजिल तक पहुंचाता है। इसलिए गुरु का कहा मानना, उनके बताए अनुसार आचरण करना ही सत्य को जानने का ठोस उपाय है। ॥卐॥

श्री ललित दत्ता जी, रायपुर

सद्गुरु-महिमा

सालों पूर्व की बात है। दीक्षा लिए हुए कुछ ही समय हुआ था नियमित रूप से दोनों समय ध्यान पर बैठता था। मित्र मंडली मे माता वैष्णों देवी के दर्शन का कार्यक्रम बना। यात्रा की तिथि तय हुई इस दौरान सद्गुरु का रायपुर आना भी तय हुआ। बड़े बेमन से मित्रों को मना किया और हंसी का पात्र भी हुआ। जिस दिन गुरुदेव रायपुर पहुंचे उस दिन हमारे मित्र मंडली भी ट्रेन के द्वारा कटरा के लिए रवाना हुए। दुखी मन से रात्रि दर्शन के समय मैंने गुरुदेव से कहा आप अगर नहीं आए होते तो अभी मैं मित्रों के साथ माता वैष्णो देवी के दर्शन के लिए चला जाता। गुरुदेव ने खाली एक ही वाक्य बोले मतलब हम गलत समय में यहां आ गए हैं। मन ही मन सोचा सही तो बोल रहे हैं। उस प्रातः काल ध्यान में बैठने पर मैंने अपने आप को शरीर से बाहर देखा फिर आसमान में एक पंछी की तरह उड़ने लगा, काफी ऊंचाई तक बादलों के पार। नीचे असंख्य वृक्ष, धरती, पहाड़, नदी, झरने, तालाब आदि दिख रहे थे। काफी देर होने के पश्चात मैंने अपने आप को एक गुफा के बाहर पाया जहां गुरुदेव स्वयं खड़े हुए थे, सूर्योदय हो ही रहा था। उन्होंने मुझे अंदर जाने के लिए इशारा किया मैं यंत्रवत पक्षी की भांति अंदर उड़ता हुआ प्रवेश किया पर मैं अपने शरीर को अपने पूजा कमरे में ही बैठा हुआ पा रहा था अंदर

जाते ही मुझे माता वैष्णो देवी के तीनों माता स्वरूप के दर्शन हुए। मैंने पूजा अर्चना भी कर ली वहां कोई और नहीं था मैं आश्चर्य चकित रह गया। मेरी मित्र मंडली तो चार दिनों से इस यात्रा पर गई हुई थी पर वह भीड़ होने के कारण नीचे कटरा में ही तीन दिनों से रुके हुए थे शासन के द्वारा ऊपर जाने का उनका आदेश ही नहीं हो रहा था और मैं बिना उनके साथ गए ही साक्षात एकांत में दर्शन पा रहा था। मैं मन ही मन सोचा मैंने सुना था इस जगह पर बहुत भीड़ होती है , सतगुरु मुझे एकांत में ही दर्शन करवा रहे थे। मैं उनको तुरंत यह सारी बातें बताने के चंचल हो उठा। ध्यान टूटने के पश्चात मैंने मित्र मंडली में फोन किया की क्या उनको माताजी के दर्शन हुए हैं वे तब तक माता मंदिर पहुंच भी नहीं पाए थे उनके यात्रा के वापसी के पश्चात मुझे पता चला वे जब गुफा में प्रवेश किये भीड़ का एक रेला आया और वे धक्के के कारण बिना दर्शन किए ही गुफा के दूसरे छोर पर पहुंच गए थे, भीड़ में वापसी का कोई सवाल ही नहीं था। उनकी आठ दिनों की यात्रा निष्फल हो गई थी। सभी बहुत दुखी थे पर मुझे बिना यात्रा किए ही सतगुरु ने माता वैष्णो देवी के साक्षात दर्शन करा दिए थे। मैं बहुत ही प्रफुल्लित महसूस कर रहा था। यह उनकी महिमा थी। उसके बाद गत 15 से 20 वर्षों में कई बार माता वैष्णो देवी के दर्शन का प्रस्ताव मिला पर मुझे कभी जाने की इच्छा नहीं हुई; मन में तो अभी भी प्रकट दर्शन का आभास बना हुआ है! ॥卐॥

शब्दों की माला

(साधकों की काव्यात्मक अभिव्यक्ति)

कुमारी मानसी तिवारी, रायपुर

अगर इस दुनिया के सारे शब्दों के बीच
मिल जाते मुझे शब्द काफी,
तो बता पाती तुम्हें मैं कि तुम मेरे कौन हो?
तो बता पाती शायद कि हर आती-जाती सांस
और धड़कते दिल की हर आवाज बस तुमसे है।
कि इस रोती बिलखती बच्ची की सारी आस बस तुमसे है।
इच्छा, आरजू, मोहब्बत, इकरार ये सारे शब्द भी फीके पड़ रहे हैं
अब, इस टिमटिमाती शमा की सारी रौनकें भी तो तुम्हीं से है।
बता पाती कैसे हर तूफान से लड़ पाने की ताकत तुम हो,
हर दर्द की मरहम, हर गीत की सरगम तुम हो।
कैसे मेरे घर का आंगन सूना नहीं होता है
अब चौखट पर हो रहे इंतजार में भी तुम हो।
दुनिया कहती है, क्या कमाल कर रही हूं मैं।
इस कमाल की मिसाल तुम ही तुम हो।
तुम प्रेरणा, तुम हिम्मत, तुम हर सपने की शुरुआत हो मेरे,
जो तुम हो साथ तो मुश्किल राहें भी हो जाती हैं आसान।
जो तुम नहीं तो बस सब कुछ वीरान।
जिस मिलन की आस में लिखी गई हैं
अरदासें कई उस आस की हर दुआ में तुम हो।
बात इतनी सी है बस सबके हिस्से सारी दुनिया,
मेरे इससे बस तुम हो। और मुझमें तो मैं हूं ही नहीं,
जो यह जादू हो रहा है वह सारा तुम हो। ॥卐॥

रचनात्मकता का आनंद

(साधकों द्वारा निर्मित भावकृतियां)

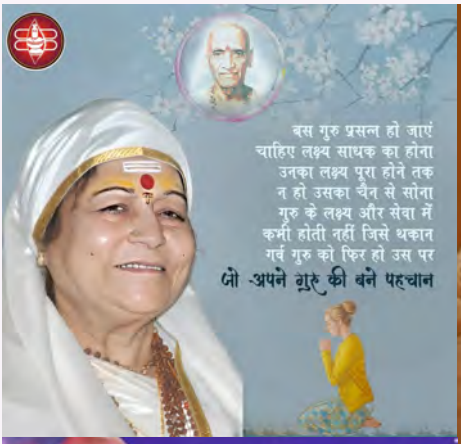
बस गुरु प्रसन्न हो जाएं
चाहिए लक्ष्य साधक का होना
उनका लक्ष्य पूरा होने तक
न हो उसका चैन से सोना
गुरु के लक्ष्य और सेवा में
कमी होती नहीं जिसे थकान
गर्व गुरु को फिर हो उस पर
जो अपने गुरु की बने पहचान

मेरे दिल में है पली, ये कैसी उम्मीद।
मेरे दृग जब भी खुले, हो गुरुवर की दीद।।
मंजिल जैसे आप,
मुसाफिर जैसे हम.

नजर मिले जो आप से
नज़ारे मिलते है.
आते है जो दर पर उन्हें
सहारे मिलते है.

खुद से ये खुद
की हसीन
मुलाकात है
आपका साथ है
तो क्या बात है
मुस्कुराने को
नहीं वजह की
जरूरत आंखो
को भाए तेरी
प्यारी सी सुरत
महेके मेहेके से
मेरे जज़्बात है
आपका साथ है
तो क्या बात है
तुझे ही संभालु
मैं अपनी सांस
में तुझे ही में
पाऊं हर अपनी
बात में खुशियों
के आंगन में
बारात है
आपका साथ है
तो क्या बात है

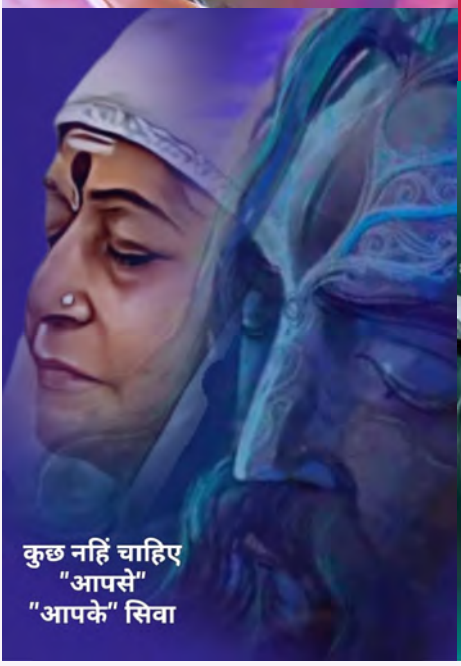
कुछ नहिं चाहिए
"आपसे"
"आपके" सिवा

हां हम मानते है खुदको खुशनसीब
क्योंकी आप मिले हो हमें

सम्मतियां

बात कहां तक पहुंची

1. श्रीमती आभा जी पाल, रायपुर

कई महीनों से "शिव गरिमा" की प्रतीक्षा थी। ज्ञात था कि कुछ कारण वश प्रकाशन अवरुद्ध है, लेकिन उसमें प्रभु बा के इतने सुंदर फोटोस ,हमारे मार्ग से संबंधित इतनी अच्छी और महत्वपूर्ण जानकारी, और प्रभु बा के हृदयगाही संदेश होते हैं कि उसकी प्रतीक्षा स्वाभाविक ही है। यह संयुक्त जनवरी-मई अंक बहुत ही सुंदर है। सद्गुरु संदेश हमें "अपने घर "काशी शिवपुरी आश्रम की ओर खींच रहा है। साधन संपदा और पाथेय प्रसाद पढ़कर आंसू नहीं रोक सकी। अपने अद्भुत परमहंस संत सदगुरु के बारे में जानकर परम आदर के अश्रु.... अहो भाग्य हमारे, हमें ऐसे सद्गुरु मिले .. अपने धन्य भाग्य होने के अश्रु ...। "रचनात्मकता का आनंद "और "शब्दों की माला " बहुत सुंदर नवीन प्रयोग है। शिव गरिमा में सुगंध पथ के पथिकों की अंतर यात्रा के लिए सद्गुरु की ओर से मार्गदर्शन और सहज अभिव्यक्ति में प्रेरणादायक संदेश और शुभकामनाएं प्रेषित किए हैं जो निश्चित ही अत्यंत उपयोगी है। "शिव गरिमा "जैसी अध्यात्मिक पत्रिका जो इतनी सरल भाषा में इतनी महत्वपूर्ण सामग्री प्रदान करती है शायद ही कोई दूसरी हो। आप सबको आभार और जय श्री कृष्णा ॥卐॥

2. श्री प्रभु लाल राठोड़, मुंबई

शिव गरिमा का संयुक्त अंक देखा। सद्गुरु संदेश सदैव की तरह साधकों के लिए प्रेरणादायक व नवीन ऊर्जा भर देने वाला है। ऐसा लगता है मानो सद्गुरु के सम्मुख बैठकर उनकी वाणी ही सुन रहे हैं। संपादकीय में साधन मार्ग को सरलता से समझाया गया है। हमने जो भी पाया है वह सद्गुरु कृपा से है, यह सही है। हम जबरदस्ती साधन को जटिल बना देते हैं यह तो सरलतम है। गुरुदेव की 21 दिन की समाधि का विवरण अद्भुत घटनाक्रम है। पाथेय प्रसाद में मेरे सद्गुरु महान प्रणम्य एवं वंदनीय अभिव्यक्ति है। यह मेरा पहला प्रयास है कि शिव गरिमा पर सम्मति दे रहा हूं। ॥卐॥

सूचनाएं

1. शिव—गरिमा पत्रिका में वर्णित विचार व सिद्धांत वासुदेव कुटुंब की मान्यता के अनुसार हैं तथा प.पू. प्रभु बा से दीक्षित साधकों के लिए ही संदेश के उपयोग हेतु हैं।

2. इस पत्रिका की अपने स्तर पर प्रिंट निकाल सकते हैं। विशेष रुप से केन्द्र संचालक एक कॉपी अवश्य केन्द्र पर रख सकते हैं।

3. इस पत्रिका में प्रकाशित फोटो का उपयोग कृपया अन्यत्र बिना अनुमति के न करें।

4. सभी केन्द्र संचालक महानुभावों से अनुरोध है कि इस पत्रिका के पठन हेतु सभी साधकों को प्रेरित करें व उन्हें अपनी प्रतिक्रिया लिखने को भी कहें। आप स्वयं भी लिखने का अभ्यास बनावें।

एकता ध्यान योग एवं सेवा ट्रस्ट द्वारा
संचालित काशी शिवपुरी आश्रम,
ईंटालीखेड़ा, तहसील—सलुम्बर,
जिला—सलुम्बर (राज.)
से प्रकाशित 'शिव—गरिमा'
ई—मासिकी, नि:शुल्क।
संपादक : स्वामी गुरुराज
मार्गदर्शक : गुरुपुत्र दत्तप्रसाद एवं
स्वामी हृदयानंद (स्वामी दादा),
ग्राफिक्स: प्रमोद सोनी,
स्वर: संजय शुक्ला

— संपर्क सूत्र —
आश्रम : 9929681423
स्वामी दादा: 9950502409
स्वामी गुरुराज : 9414740814

शिव गरिमा के सभी **pdf** और **audio files** के लिए
QR Code Scan करें
www.prabhubaa.com, Prabhu Baa App